

अनुशित्तिन् (von शित्त् mit अनु) adj. sich worin ühend: शब्द्वेध्या^० Dāc. 2, 56.

अनुशिव (1. अनु + शिव) m. N. pr. eines Schlangenpriesters Pañkāv. Ba. in Ind. St. I, 33.

अनुशिवम् (von 1. अनु + शिव) adv. nach Çiva Vor. 6, 61.

अनुशिशु (1. अनु + शिशु) adj. vom Jungen (Füllen u. s. w.) begleitet:

अनुशिशुं वडवधेनुम् Kāṭ. Ça. 19, 4, 5.

अनुशिशु s. शास्त्रं mit अनु.

अनुशीलन (von शीलम् mit अनु) n. 1) beständige Wiederholung (पुनः-पुनरभ्यास). — 2) anhaltende Verehrung: अनुकूल्येन कृत्तानुशीलनेन भक्तिरुत्तमा । इति भक्तिरसामृतसिन्धुः । ÇKDra.

अनुशोचन (von श्रुच् mit अनु) n. das Wehklagen H. 275, Sch. Gāṭāḍu. im ÇKDra. तारानु^० der Tārā R. 4, 20. in der Unterschr.

अनुशोभिन् (von श्रुम् mit अनु) adj. glänzend: पुष्पान्ममतादनुशोभिन्: R. 5, 17, 4.

अनुषक् indecl. gaṇa स्वरादि. Wohl von सञ्ज् mit अनु. — Vgl. अनुषक्.

अनुषङ्ग (von सञ्ज् mit अनु) gaṇa न्यङ्गादि. m. 1) Anheftung, Anschluss:

नासिकयोस्त्वनुषङ्गे ऽनुनासिकम् RV. Prāt. 14, 3. — 2) Sehnsucht: मन्मथशिवी — अनुषङ्गाद्भव: Amar. 91 (Schol. = प्रियस्मरणा). — 3) Mitleid

HALĀ. im ÇKDra. — 4) unmittelbare Folge: न्याये उपनयस्त्रायं (sic) पदस्य निगमने ऽनुषङ्गः । यथा । वक्रिच्यव्याधुमवाद्यापे तस्माद्वक्रिमान् । ÇKDra. — 5) = प्रसङ्गः । अयोदिशे प्रवृत्तावन्यस्यापि सिद्धिः । यथा । नित्यक्रिया तथा चान्ये ऋणुषङ्गकाला श्रुतिमिति स्मृतिः । ÇKDra. — 6) Her-

beziehung eines Wortes aus der Umgebung zur Ergänzung, = एकत्रा-

न्वितपदस्यान्यत्रान्वयः । यथा । कोषो बलं चापकृतमित्यौदो बलान्विता-

पकृतस्य कोषे ऽन्वयः । ÇKDra. कृतेत्यनुषङ्गः Çāṅk. zu Çāṅk. 42; vgl. अनु-

षङ्गनीय. — 7) der dem consonantischen Auslaut der Wurzeln ange-

gefügte Nasal P. 4, 1, 46, 47, Vārt. 1; vgl. Siddh. K. zu 7, 1, 59; तेन ये

ऽत्र नकारानुपहतास्ते तृष्पादयः ।

अनुषङ्गिन् (wie eben) adj. sich anheftend, sich anklammernd: सप्तका-

स्यास्य वर्गस्य (von Sünden) सर्वत्रैवानुषङ्गाः M. 7, 52. KULL.: सर्वस्मिन्नेव

रात्रमाण्डले प्रायेणावस्थितस्य.

अनुषङ्गनीय (wie eben) adj. aus der Umgebung zur Ergänzung her-

beizuziehen: उपविश्य परिश्रमविनोदनं कुरुतेत्यनुषङ्गनीयम् Sch. zu Çāṅk.

13, 4.

अनुषट् indecl. gaṇa चादि und स्वरादि; vielleicht von सञ्ज् mit अनु;

vgl. अनुषक्.

अनुषाण (1. अनु + षाण) gaṇa कच्छादि.

अनुष्टुति (von स्तु mit अनु) f. Lob, Preis: इयमु ते अनुष्टुतिश्चकृषे तानि

पौंस्या RV. 8, 52, 8. 57, 7.

अनुष्टुब्धी (von अनुष्टुम् + गर्भ) f. N. eines Metrums von der Gattung

Ushñih, dessen erster Pāda fünf, die drei folgenden je acht Silben

zählen. माद्यः पञ्चान्नरः पाद उत्तरे ऽष्टान्नरास्त्रयः । अनुष्टुब्धीर्भव सौल्लिखसा-

गस्त्ये ऽस्ति पितृं न्विति (RV. 4, 187, 1.) RV. Prāt. 16, 26. VS. App. LVII.

अनुष्टुम् (von स्तुम् mit अनु) f. 1) lauter Anruf(?): अनुष्टुम्ननुं चर्षुर्व-

मोषामन्द्रं नि चिक्रुः कवयो मनीषाः RV. 10, 124, 9. Redē Naigh. 1, 11.

TRIK. 3, 3, 283. MED. bh. 24. ÇABDAR. im ÇKDra. — 2) N. eines in seiner

Grundform aus vier achtsilbigen Pāda's bestehenden Versmaasses, das

nachmals in den Çloka übergegangen ist. द्वात्रिंशदक्षरानुष्टुब्धोरा ऽष्टा-

क्षराः समाः RV. Prāt. 16, 27. RV. 10, 130, 4. VS. 8, 47. 10, 13. AV. 8, 9,

14, 20. ÇAT. Br. 3, 1, 4, 2, 21. 14, 8, 15, 8. (= BṚH. ĀR. UP. 5, 14, 5.) अनुष्टु-

प्संपेद् 7, 1, 2, 15. In der späteren Metrik umfasst A n u ṣ ṭ u ḅ ḥ eine ganze

Klasse von Metren, die aus 4 × 8 Silben bestehen, COLEBR. Misc. Ess.

II, 152. 159. TRIK. 3, 3, 283. MED. bh. 24. ist aus Brahma's nördlichem

Munde entstanden VP. 42.

अनुष्टोभन (wie eben) n. ein Lob, das dem eines Andern noch nach-

klingt (?): अनुष्टुवनुष्टोभनाद्वायत्रमिव त्रिपदा सतो चतुर्वेन पदेनानुष्टोभ-

तीति च ब्राह्मणम् Nra. 7, 14.

अनुष्ठा (von स्था mit अनु) adj. dabeistehend, gegenwärtig: अभीमिन्ने

नद्यो वत्रिणा क्तिता विश्वा अनुष्ठाः (alle zugleich) प्रवृषोषु निघ्नते RV. 4,

54, 10. dem Sinne nach adv. = अनुष्ठु.

अनुष्ठार्तृ (wie eben) m. Ausfühler, Vollfühler (einer Handlung u. s. w.)

AV. 15, 4, 1. 5, 1. °चाणक्यमतवित्तदनुष्ठाता (d. i. °वित् तदनु°) च Pañkāt.

253, 12.

अनुष्ठान (wie eben) 1) n. a) das sich-an-Etwas-Machen, Beginnen:

पदि त्रयावश्यमेव समुद्रिणा सकृ विप्रकानुष्ठानं कार्यम् Pañkāt. 79, 22. = क-

र्मारम्भः ÇKDra. — b) das Obliegen, Ausüben, Vollbringen: पलायनमप्य-

शवधानुष्ठानम् Hit. 18, 15, v. 1. धर्मे स्वयमनुष्ठाने कस्यचित्तु मकामनः

Selbstausbübung auf dem Gebiete der Tugend ist nur dem einen oder

andern Edlen eigen I, 98. नानुष्ठानैर्विकीनाः स्युः कुलजा विधवा इव Pañ-

kāt. II, 103. Das obj. im gen.: अस्य नित्यमनुष्ठानं सम्यक्पूर्वादतन्त्रितः M.

7, 100. तत्कर्मणामनुष्ठानम् Jāṅk. 3, 156. geht im comp. voran: उपरुध्यते

तपोऽनुष्ठानम् Çāṅk. 57, 13. Pañkāt. 188, 12. शास्त्रानुष्ठान Vernachlässi-

gung der Lehrbücher Hit. 4, 13. — 2) f. °नी Ausführung, Handlung

KAUC. 81. Vgl. उत्पायनी.

अनुष्ठानशरीर (अनुष्ठान + शरीर) n. der Körper des Ausübens; so

heisst in der Sāṅkhya-Lehre das Vehikel des feinern Körpers, das

sich in der Mitte zwischen diesem und dem groben Körper befindet,

COLEBR. Misc. Ess. II, 246.

अनुष्ठु (von स्था mit अनु) adv. dabeistehend; unmittelbar, alsbald:

पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामतूत्प्रशासद्दि द्धावनुष्ठु RV. 4, 95, 3. नर्मते

ऽस्तु नारदानुष्ठु विडुषे AV. 12, 4, 45. — Vgl. अनुष्ठा, अनुष्ठुया, अनुष्ठा.

अनुष्ठुया (von अनुष्ठु) adv. dass.: उभा शंसो मूय सत्यतति ऽनुष्ठुया कृ-

णुक्कृयाण RV. 4, 4, 14.

अनुष्ठेय (von स्था mit अनु) adj. auszuführen, zu vollbringen: मया तु

यदनुष्ठेयम् R. 4, 6, 20. पौरुषायदनुष्ठेयम् 6, 100, 2.

अनुष्ठो (aus अनुष्ठुया) adv. 1) dabeistehend, unmittelbar: पैद्वानुष्ठा

चतुष्या (mit eigenen Augen) प्रज्ञानात्यत्र प्रज्ञानाति Ait. Br. 1, 8. तस्माद्य-

तेरा विवदमानयोराकाङ्क्षमनुष्ठा चतुष्यदर्शमिति तस्य ब्रह्मधाति 2, 40. —

2) sofort, nach einander: अनुष्ठा च यजेति यदाह सुयज्ञा च यजेति Çat. Br.

1, 4, 2, 17. अनुष्ठा यतत् 5, 2, 6. तदा अनुष्ठा यद्धस्तेन प्रदीयते 2, 1, 2, 12.

अग्निनुष्ठा स्व रेतः प्रजनयिष्यते 2, 4, 17. पडिंशतिरस्य वडुष्यस्ता अनु-

ष्ठोद्ययावयतात् (darnach P. 7, 1, 39, Sch. zu verbessern) Ait. Br. 2, 6. —

Vgl. अनुष्ठु.

अनुष्ठ (3. घ्र + उल्ल) 1) adj. f. घ्रा. a) nicht heiss: अनुष्ठानिर्घ्रानाभिरद्भिः

M. 2, 61. kalt: अनुष्ठैः — घ्रानन्दाश्रुविन्दुभिः RAGH. 12, 62. Vgl. अनुष्ठगु.